महामत कहे ए मोमिनों, ल्यो हकीकत कुरान।
ढूंढ़ो फिरके नाजी को, जो है साहेब ईमान।। २० ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मोमिनो! कुरान की इस हकीकत को समझो और पारब्रह्म के ऊपर पक्का यकीन लाने वाले नाजी फिरके को ढूंढो।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ४०७ ।।

हक की सूरत

हाए हाए देखो मुस्लिम जाहेरी, जिन पाई नहीं हकीकत।
हक सूरत अर्स माने नहीं, जो दई महंमद बका न्यामत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जाहिरी अर्थ लेने वाले मुसलमानों को देखो जिन्होंने सच्ची हकीकत को समझा नहीं। मुहम्मद साहब ने इनको जो न्यामत लाकर दी कि खुदा की सूरत है, मैं मिलकर आया हूं, उसे वह मानते नहीं हैं।

आसमान जिमी की दुनियां, करी सबों ने दौर।
तरफ न पाई हक सूरत, पाई ना अर्स बका ठौर।। २ ।।

आसमान के देवी-देवता और दुनियां के लोगों ने पारब्रह्म को खोजने के बड़े प्रयत्न किए, परन्तु वह पारब्रह्म के स्वरूप और अखण्ड परमधाम के ठिकाने को नहीं जान सके।

खोज करी सब दुनियां, किन पाई न सूरत हक।
खोज खोज सुन्य में गए, कोई आगूं न हुए बेसक।। ३ ।।

दुनियां वालों ने बहुत खोज की, परन्तु पारब्रह्म के स्वरूप को नहीं पाया। खोजते-खोजते निराकार में ही समा गए और संशय छोड़कर आगे नहीं जा सके।

दौड़ थके सब सुन्य लो, किन ला हवा को न पायो पार।
तब खुदा याही को जानिया, कहे निरंजन निराकार।। ४ ।।

सभी दौड़कर निराकार तक थक गए। निराकार के पार कोई नहीं जा सका। निराकार और निरंजन को ही पारब्रह्म समझ लिया।

पीछे आए रसूल, कहे मैं पाई हक सूरत।
बोहोत करी रद-बदलें, वास्ते सब उमत।। ५ ।।

इन सबके बाद रसूल साहब आए और उन्होंने कहा कि मैं पारब्रह्म से मिलकर आया हूं। मैंने पारब्रह्म से, अपनी उम्मत के वास्ते बहुत वार्तालाप किया है।

अर्स बका हौज जोए, पानी बाग जिमी जानवर।
और देखी अरवाहें अर्स की, कहे मैं हक का पैगंमर।। ६ ।।

अखण्ड परमधाम, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी, पानी, बगीचे, जमीन, जानवर और परमधाम की रूहों को मैंने देखा, अतः पारब्रह्म का पत्रवाहक (रसूल) बनकर आया हूं।

बोहोत देखी बका न्यामतें, करी हक सों बड़ी मजकूर।
ख्वाब जिमी झूठी मिने, किया हक बका जहूर।। ७ ।।

मैंने अखण्ड परमधाम में बहुत सी न्यामतें देखी हैं और पारब्रह्म से बड़ी बातें की हैं। उसी के अनुसार इस सपने की झूठी दुनियां में अखण्ड परमधाम का (श्री राजजी महाराज का) प्रकाश मैंने फैलाया।

Nijanand App

कौल किया हके मुझसे, हम आवेंगे आखिरत।
हिसाब ले भिस्त देयसी, आखिर करसी कयामत।। ८ ।।

पारब्रह्म ने मुझसे वक्त आखिरत को आने के लिए वायदा किया है। वह यहां न्यायाधीश बनकर आएंगे और सबका हिसाब लेकर सबको बहिश्तों में अखण्ड करेंगे।

वास्ते खास उमत के, मैं ल्याया फुरमान।
सो आखिर को आवसी, तब काजी होसी सुभान।। ९ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैं ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते कुरान लेकर आया हूं। वह ब्रह्मसृष्टियां आखिरत को आएंगी और तब पारब्रह्म न्यायाधीश बनकर बैठेंगे।

जो इन पर आकीन ल्याइया, ताए भिस्त होसी बेसक।
जो इन बातों मुनकर, ताए होसी आखिर दोजक।। १० ।।

रसूल साहब ने यह भी कहा कि जो काजी इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के ऊपर ईमान लाएगा उसे निश्चित ही बहिश्त मिलेगी। जो मेरी इन बातों को स्वीकार नहीं करेंगे उन्हें आखिरत में दोजख की अग्नि में जलना होगा।

खुदा काजी होए बैठसी, होसी फजर को दीदार।
ले पुरसिस लैलत कदर में, होसी फजर तीसरे तकरार।। ११ ।।

खुद पारब्रह्म न्यायाधीश बनकर बैठेंगे। लैल तुल कदर की रात के बाद फजर में सबको दीदार होगा, अर्थात् जागनी लीला होगी। लैल तुल कदर की रात्रि के तीसरे तकरार (जागनी लीला) के बाद सबका हिसाब लेंगे।

सब पैगंमर आवसी, होसी मेला बुजरक।
तब बदफैल की दुनियां, ताए लगसी आग दोजक।। १२ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के साथ में सब पैगम्बर इकट्ठे होंगे और फिर बहुत बड़ा भारी मेला होगा। उस समय संसार के बुरे काम करने वाले जीवों को पश्चाताप की अग्नि में जलना पड़ेगा।

जलती जलती दुनियां, जासी पैगंमरों पे।
ताए सब पैगंमर यों कहे, तुम छूट न सको हम से।। १३ ।।

पश्चाताप की अग्नि में जलती हुई दुनियां अपने पैगम्बरों के पास जाएगी कि आप हमें इस आग से बचाइए। तब सभी पैगम्बर इस तरह से जवाब देंगे कि यह हमसे सम्भव नहीं है।

कहें पैगंमर हम सरमिंदे, हकसों होए न बात।
तुम जाओ महंमद पे, वे करसी सबों सिफात।। १४ ।।

सभी पैगम्बर कहेंगे कि हम शार्मिन्दा हैं। हम श्री प्राणनाथजी से बात नहीं कर सकते। तुम रसूल मुहम्मद के पास जाओ। वही सबकी सिफारिश इमाम मेंहदी से करेंगे।

ए बात पसरी दुनी में, जो कोई ल्याया आकीन।
सो नाम धराए मुस्लिम, माहें आए महंमद दीन।। १५ ।।

इस बात की खबर दुनियां में फैल गई। जिन लोगों ने उन पर विश्वास किया वह अपने को मुस्लिम (पूरा यकीन वाला) कहकर श्री प्राणनाथजी के निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-ए-इस्लाम) में आ गए।

Nijanand App

खुदा के नूर से महंमद, हुई दुनियां महंमद के नूर।
इन बात में सक जो ल्याइया, सो रह्या दीन से दूर।। १६ ।।

खुदा के नूर से मुहम्मद (अक्षर ब्रह्म) और मुहम्मद (अक्षर ब्रह्म) के नूर से दुनियां पैदा हुई है, ऐसा कुरान में लिखा है। इसमें जो संशय लाते हैं, वही मुहम्मद के दीन से दूर काफिर हैं।

कोईक पूरा ईमान लयाइया, बिन ईमान रहे बोहोतक।
कई जुबां ईमान दिल में नहीं, सो तो कहे मुनाफक।। १७ ।।

उनमें से कुछ लोग पूरा ईमान लाए और बहुत लोग ईमान के बिना रह गए। कई लोग कहते थे कि हम ईमान वाले हैं, परन्तु दिल से नहीं मानते थे। ऐसे लोगों को दोगला कहा है।

केते कहावें मोमिन, और दिल में मुनकर।
एक नाजी फिरका असल, और दोजखी बहत्तर।। १८ ।।

कई ऐसे हैं जो अपने को मोमिन कहते हैं और दिल से बेईमान हैं। इन फिरकों में एक नाजी फिरका ही असलियत को पहचान कर ईमान ला सका और बहत्तर फिरके दोजखी हो गए।

कह्या फिरके नाजीय को, होसी हक की हिदायत।
सब फिरके इनमें आवसी, होसी एक दीन आखिरत।। १९ ।।

कुरान में लिखा है कि हक की हिदायत एक नाजी फिरके को ही है और बाकी सब फिरके जब निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-ए-इस्लाम) में आएंगे तब एक दीन होगा।

तब होसी कुरान का माजजा, और नबी की नबुवत।
ए कौल तोड़ जुदे पड़त हैं, सो कौल मेंहेदी करसी साबित।। २० ।।

तभी कुरान के रहस्य खुलेंगे और पैगम्बर की पैगम्बरी सच्ची कहलाएगी। जाहिरी अर्थ लेने वाले मुसलमान इसीलिए लड़ झगड़ कर अलग-अलग हो रहे हैं, क्योंकि उन्हें सच्चाई पर विश्वास नहीं है। अब इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) आकर कुरान के इन सब वचनों को सत करेंगे।

कुरान में ऐसा लिख्या, खुदा एक महंमद साहेद हक।
तिनको न कहिए मोमिन, जो इनमें ल्यावे सक।। २१ ।।

कुरान में यह भी लिखा है कि खुदा एक है और मुहम्मद इस बात की गवाही देते हैं जो इस बात पर संशय लाते हैं उनको मोमिन नहीं कहना।

जो हक बका सूरत में, मुस्लिम ल्यावे सक।
तो क्यों खुदा एक हुआ, क्यों हुआ महंमद बरहक।। २२ ।।

अखण्ड पारब्रह्म के स्वरूप की पहचान में जो भी मुसलमान संशय लाता है वह कैसे कहेगा कि खुदा एक है और मुहम्मद की बातें सत हैं?

हाए हाए गिरो महंमदी कहावहीं, कहे हक को निराकार।
जो जहूदों ने पकड़या, इनों सोई किया करार।। २३ ।।

लानत है कि मुहम्मद की जमात के मुसलमान कहलाकर पारब्रह्म को निराकार कहते हैं। हिन्दुओं ने जैसे निराकार कहा उसी को इन्होंने भी निश्चित कर लिया।

Nijanand App

जो कहे खुदा को बेचून, तब बरहक न हुआ महंमद।
खुदा महंमद वाहेदत में, सो कलाम होत है रद।। २४ ।।

यह मुसलमान खुदा को बेचून, अर्थात् निराकार कहते हैं। ऐसा कहने से मुहम्मद की बात सत न हुई, क्योंकि खुदा और मुहम्मद के बीच परमधाम में जो नब्बे हजार बातें हुई हैं, वह शब्द ही रद्द हो जाते हैं।

गैर दीन बेचून कहे, पर क्यों कहे मुसलमान।
कहावें दीन महंमदी, तो इत कहां रह्या ईमान।। २५ ।।

दूसरे लोग अज्ञान के कारण पारब्रह्म को भले ही निराकार कहें पर मुसलमान कैसे कह रहे हैं? यह अपने को मुहम्मद के दीन को मानने वाले कहते हैं। इन्हें फिर मुहम्मद पर ईमान कहां रह गया?

खुदा एक महंमद बरहक, सो गैर दीन माने क्यों कर।
हक सूरत की दई साहेदी, हकें तो कह्या पैगंमर।। २६ ।।

खुदा एक है और मुहम्मद की बातें सत हैं, यह दूसरे धर्म वाले लोग कैसे मानेंगे? मुहम्मद साहब ने पारब्रह्म के स्वरूप की गवाही दी है, इसलिए पारब्रह्म ने रसूल को पैगम्बर कहा।

दे साहेदी खुदा की सो खुदा, ऐसा लिख्या बीच कुरान।
एक छूट दूजा है नहीं, यों बरहक महंमद जान।। २७ ।।

कुरान में ऐसा लिखा है कि जो खुदा की गवाही देता है, वह खुद खुदा ही होता है। एक खुदा को छोड़कर दूसरा कोई भी नहीं है, इसलिए मुहम्मद की वाणी सत है।

महामत कहे सुनो मोमिनों, दीन हकीकी हक हजूर।
हक अमरद सूरत माने नहीं, सो रहे दीन से दूर।। २८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो। हकीकी दीन को मानने वाले ही हक के चरणों में पहुंचते हैं (निजानन्द सम्प्रदाय को मानने वाले ही मूल-मिलावे में उठेंगे)। जो पारब्रह्म का किशोर स्वरूप हैं, ऐसा नहीं मानते, वह हकीकी दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) से दूर हैं।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ४३५ ॥

रूहों की बिने देखियो

जो उमत होवे अर्स की, सो नीके विचारो दिल।
बिने अपनी देख के, करो फैल देख मिसल।। १ ।।

जो परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हो, वह अच्छी तरह से दिल में विचार कर देखो। पहले अपनी चाल देखो। फिर अपनी जमात को देखकर काम करो।

कैसा साहेब है अपना, और कैसा अपना वतन।
कैसो अपनो वजूद है, जो असल रूहों के तन।। २ ।।

पहचान करो अपने धनी कौन हैं? अपना घर कैसा है? वह तन कैसे हैं जो मूल तन (परआतम) है।

तुम सबे जानत हो, तुमको कही खबर।
ऐसी बात तुमारी बुजरक, सो भूल जात क्यों कर।। ३ ।।

तुमको जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से पहचान करा दी है जिससे अब तुम सब कुछ जानते हो। तुम्हारी इतनी बड़ी महानता है, अब भूल क्यों जाते हो?

Nijanand App